B.Ed. 1st year (19-21)
EPC - I

Date 20/06/20

* "मुर्दहिया" का अर्थ :-

डॉ० तुलसीराम द्वारा रचित आत्मकथा का शीर्षक मुर्दहिया जिसे सिर्फ एक शीर्षक मात्र नहीं समझा जा सकता है क्योंकि यह कहानी ग्रामीण व्यवस्था को दर्शाती है जिसमें मुर्दहिया का अर्थ है गाँव का वह कोना जहाँ मुर्दे फूँके जाते हैं तथा मरे हुए जानवरों के चमड़े उतारे जाते हैं और वहीं दलितों की बस्तियाँ थी जिन्हें गाँव में अछूत समझा जाता था। परन्तु उन्हीं बस्तियों से बहुत्तेरे कामों को करने का रास्ता गुजरता था। अर्थात चरवाही से लेकर हरवाही, स्कूल या दुकान, बाजार या मंदिर या फिर मजदूरी करने जाने के लिए रेलगाड़ी पकड़ना हो तो सभी को मुर्दहिया से ही होकर गुजरना पड़ता था।

अतः कहा जाये तो मुर्दहिया के कारण ही पूरे धरमपुर गाँव को ही अंधविश्वास भूत-प्रेत, झाड़-फूँक, टोने-टोटके का जरिया समझा जाता था इसलिए डॉ० तुलसीराम ने अपनी आत्म-कथा 'मुर्दहिया' के माध्यम से अंधविश्वास और कुरीतियों का पाया जाना अपने ही गाँव में नहीं बल्कि पूरे भारतवर्ष के गाँवों की सामाजिक व्यवस्थाओं का चित्रण किया है।

* शिक्षा :-

इस आत्मकथा ने यह बताने का प्रयास किया है कि लेखक ने अपने जीवन में शिक्षा प्राप्त करने तथा दलित समुदाय में जन्म लेने का कठिन संघर्षों का सामना किया है। दलित बस्तियों को गाँव के दक्षिण भागों में बसाया जाता था तथा

Page No.
Date

उन्हें गाँव के सामाजिक - धार्मिक कार्यों में भाग लेने का कोई अधिकार नहीं था परन्तु इन सभी कुरीतियों के बावजूद भी लेखक ने शिक्षा के माध्यम से इन पर विजय प्राप्त की। अतः शिक्षा सभी के लिए अनिवार्य है।

Scanned with CamScanner